बिना कान का पुरुष

"मैं तुम्हे एक बहस के लिए चुनौती देता हूँ."
ऐसा लगता हैं, जैसे किसी ने बस अभी मौखिक बन्दूक को अपनी पिस्तौल्दान से बाहर निकाला हो, उंगली ट्रिगर पर रख कर, और तुम्हे उड़ा देने को तैयार हो. उत्सुक? इसका परिणाम आमतौर पर ढाल की जांच के रूप में होता हैं. हम अपने शब्द सूची का, बहस के सारे भण्डार, अपने साहस और मनोबल का विश्लेषण करते हैं.
हम अपने आप से यूँ कहते हैं, 'ऐसा लगता हैं मानो उसकी जीभ की क्षमता .२२ कैलिबर एक गोली की नाई हो', और कई कंटेनर के मौखिक हथगोले. मेरा लौ फेकने वाला व्यक्तित्व हैं, और अर्द्ध स्वचालित मुंह'.
'हाँ चलो लड़ाई करते हैं....मेरा मतलब हैं बहस करते हैं'.
अंग्रेजी भाषा में हम दुसरे के दृष्टिकोण पर 'छेद डालना' जैसा रूपक का भी इस्तेमाल करते हैं. हम तब तक सच्चाई का साथ नहीं दे सकते जब तक हमारा ध्यान केन्द्रित होता हैं की हम हमने शब्दों का उच्हरण कितनी चतुराई से किया हैं, कितना आत्म विश्वास और तैयार हम हैं, कितने आकर्षित हम बन सकते हैं, या हम दूसरों को कितना डरा सकते हैं.
क्या आप जानते हैं जब एक बहस मौखिक हमले में बदल जाता हैं तो इससे हम क्या सीखते हैं? कुछ नहीं. वास्तव में इस तरह का विनिमय, दिल को कठोर और मन को स्थिर कर देता हैं .
नहीं, सभी बहस इस तरह होना ज़रूरी नहीं हैं. मैं ऐसे बहस में शामिल हुआ जहाँ अंतिम परिणाम प्रशंसा, शिक्षा और विकास था.
मुख्य अंतर? कान.
आप एक ऐसे मनुष्य की कल्पना कीजिये जिसने ध्वनी प्रतिरोधी शस्त्र पहन रखा हुआ हैं और आपकी उससे बहस हो रही हो. शायद वैसा प्रतिरोधी आपने फायरिंग रेंज में या उन उद्योगों में जहाँ काफी शोर होता हैं, देखा होगा. क्या होगा अगर किसी बहस में आप किसी को ऐसा प्रतिरोधी पहने हुए देखे. यह मौखिक युद्ध के लिए निर्धारित हैं, और अक्सर ऐसा ही होता हैं.

क्या छूट रहा हैं? कान. सुनना.

क्या आपको कभी दो व्यक्तियों को एक दुसरे की बात सुनाने का अनुभव हैं? मेरा मतलब हैं सही में एक दुसरे की बातें सुनना. शायद कोई पति पत्नी किसी बहस में बहुत गंभीरता से उलझे हो. वे अपने संघर्ष का हल पाने में असमर्थ हैं, और उनके रिश्ते में तनाव के चिन्ह भी दिखने लगे

हैं. शायद तुम एक मित्र, परिवार का कोई सदस्य या कोई परामर्शदाता हो जो उनके संघर्ष को सुलझाने में उनकी मदद कर रहे हो.

आप तब तक उनके संघर्ष हा हल नहीं ढूंढ पायेंगे जब तक की आप उनको आपस की बातें नहीं सुनाते. मेरा मतलब हैं सच में सुनना.

मैं कभी कभी इस परिदृश्य में लोगों को एक दुसरे की बातें दोहराने को कहता हूँ. यह देखना दिलचस्प होता हैं की यह कितना कठिन हैं. देखते हैं, एक पति को अपनी पत्नी की दृष्टिकोण को दोहराने को कहा गया हैं. वो कुछ ऐसा बोलेगा, 'यह इतनी बेवकूफ हैं, यह सोंचती हैं की दिल्ली जाना सारी समस्याओं का समाधान होगा. ऐसा करने से समस्याओं में केवल वृधि होगी, खासकर अगर हम उसकी माँ के पास रहते हैं'!
मैं जवाब में कह सकता हूँ, 'अब मुझे यकीन हैं की यह तुम्हारी पत्नी का दृष्टिकोण नहीं हैं. मुझे लगता हैं, तुमने सिर्फ अपना दृष्टिकोण बताया हैं. मैं तुमसे बस तुम्हारी पत्नी की दृष्टिकोण को दोहराने को कह रहा हूँ. क्या तुम कर सकते हो?'

शायद इस बिंदु पर थोड़ी अनबन हो. वह फिर से अवश्य कोशिश करेगा.
'खैर, वह सोंचती हैं की दिल्ली जाने से हमारी सारी समस्याओं का समाधान होगा.'
अब मुझे पता हैं, इस बयान में दो बातें गलत हैं. सबसे पहले, मैं जानता हूँ कि वो यह नहीं सोंचती कि दिल्ली चले जाने से सभी समस्याओं का समाधान हो जाएगा. साथ ही उसके आवाज़ कि टोन को संबोधित करना आवश्यक हैं, क्यूंकि शायद उसने छेड़ते और परिहासशील टोन में यह बात कही थी. और यह निश्चित रूप से उसकी पत्नी के दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व नहीं हैं.

तो मैं उससे पूछूँगा, 'मैं देखना चाहता हूँ कि क्या तुम वास्तव में अपनी पत्नी का दृष्टिकोण इतनी सरलता से दोहरा पाते हो कि तुम्हारी पत्नी भी माने कि तुमने सही बोला हैं.'
वह कई बार कोशिश कर सकता हैं, फिर मैं उसकी पत्नी से पूछूँगा "क्या यही आपका विचार हैं"?
वह अक्सर बोलती हैं, 'पूरी तरह नहीं' और फिर अपनी बात को समझाएगी.

अगर तुम चाहते हो तो अब एक लम्बे सन्न के लिया तैयार हो जाओ. लेकिन अगर वह सच में इच्छुक और इमानदार हैं, कुछ समय पश्चात, वो उचित प्रतिकृति में अपने पत्नी के दृष्टिकोण को साधारण टोन में बोल पायेगा जिससे की उसकी पत्नी भी यह मान लेगी की उसने उसका विचार सही दर्शाया हैं.
एक बहुत ही दिलचस्प बात इस जगह पर होना शुरू होगा. एक मित्र या एक परामर्शदाता के रूप में अक्सर तुम्हारा काम ख़त्म हो जाएगा. आप बस अपने आप को अपने कोशिश के परिणाम को देखते पायेंगे. यह इसलिए हैं क्यूंकि आपने इन सारी परिस्थितियों का महत्वपूर्ण काम किया हैं.

आपने उन दोनों को एक दुसरे की बातें सुनने पर मजबूर किया हैं. कान....इस समय तक केवल मूंह थे. अब वे सही रूप में इंसान हुए जिनके पास केवल मूंह ही नहीं बल्कि दो कान भी हैं.
वार्ता. एक और बहुत गन्दी शब्द. एक महान शब्द. लेकिन कई लोग इससे यह समझते हैं की, 'हर कोई एक ही राय के साथ निष्कर्ष पर पहुंचना चाहिए. मेरा'. यह शब्द वे लोग बहुत पसंद करते हैं, जो अपने दृष्टिकोण में उदार और मिश्रित होते हैं. ऐसे लोगों के विचार में सच, किसी विरोधाभासी विचारों को शामिल या ओवरलैप भी कर सकता हैं. यह एक बहुत दायरिक समज और अच्छे शब्द की तरह ध्वनि कर सकता है, लेकिन सावधान! इसको कहने का एक और तरीका भी हो सकता हैं, 'मैं जैसा सोंचता और विचार करता हूँ वैसा ही हर कोई को करना चाहिए'.

उदहारण स्वरुप, यदि आपके पास कुछ लोग हो जो अपने दृष्टिकोण पर चर्चा करते हो. पहला व्यक्ति मानता हैं की 'अ' सही हैं, इसलिए 'बी' और 'सी' गलत हैं. दूसरा व्यक्ति यह विशवास कर सकता हैं की सारे विकल्पों में से कोई भी सही नहीं, वास्तव में सच नाम की कोई चीज़ ही नहीं. तीसरा व्यक्ति यह मान सकता हैं की, 'अ' भी सही हैं, और वैसे ही 'बी' और 'सी' भी सही हैं.

'वार्ता' इनमे से प्रत्येक के लिए अलग ही मतलब हो सकती हैं. अब हमारे पास बूचा मनुष्यों के लिए एक मजबूत क्षमता हैं. यदि शिविर का यह मानना हैं की 'अ', 'बी' और 'सी' का सामान्य रूप से मान्य दृष्टिकोण होना चाहिए, वे वार्तालाप का सुझाव देते देते एकालाप का भी सुझाव दे सकते हैं.
वार्ता, दो शब्द, व्यास और चिन्ह या दो विचारों का मिश्रण हैं: १) दो २) शब्द. इस शब्द का अर्थ हैं की दोनों पक्षों या विचारों की आवाज़ को उठाने या सुनने की आवश्यकता हैं. अक्सर, वैश्विक नजरिया यह विश्वास नहीं करता की दृष्टिकोण में कोई अंतर हो सकता है. वैश्विक नजरिया जो बस दूसरे के दृष्टिकोण को अपने प्रतिमान में खपत कर लेता हैं-एक तरह से अपने वेदांत का वैश्विक नजरिया को बढ़ावा देने के रूप में शब्द 'बातचीत' का उपयोग कर रहा है. वार्ता फिर एक मॉडल शब्द बन जाता हैं. लेकिन इसका अर्थ इसकी जड़ों से काट दिया गया है. यह उनके लिए एक सम्मक्षनीय निमंत्रण जो आकर सीखना चाहते हैं की क्यूँ आपका, 'दृष्टिकोण वास्तव में मेरा नजरिया हैं'. वार्तालाप एकालाप में बदल जाता हैं. बिना कान के पुरुष.

क्या यह संसार की सारी समस्याओं का समाधान करेगा? नहीं. वैसे कई कारणों में से एक कारण जिसकी वजह से लोग नहीं सुनना पसंद करते हैं की यदि वे वाकई में सुनते हैं, उन्हें ऐसे लोग मिलेंगे जो की बिलकुल विपरीत विचार करते हैं. कुछ मामलो में हमें दुसरे के दृष्टिकोण जो हमारी समझ से परे हैं, उनके लिए वास्तविक प्रशंसा मिलती हैं. संभव हैं की हमें ऐसे भी लोग मिले जिनका विश्वास हमारे विश्वास से बिलकुल अलग हैं और हमें उससे परेशानी भी हो सकती हैं.

लेकिन सुनना पहला कदम हैं.

एक और ज़रूरी चीज़ हैं, साधारण रूप से कहा जाए तो ...'प्रेम'.

व्याट रोबिनसन

कॉपीराईट © 2009 Karma2Grace.org सभी आधार सुरक्षित